टिप्पणियाँ

24

रुद्र अध्याय

शुक्लयजुर्वेदसंहिता का सोलहवाँ अध्याय रुद्र अध्याय नाम से प्रसिद्ध है। पंद्रहवें अध्याय में अग्निचयन प्रकार का वर्णन करके सोलहवें में सौ रुद्रियहोममन्त्र कहे गये हैं। इन मन्त्रों में रुद्र अध्याय में रुद्रदेवता का स्वरूप और वैशिष्ट्य को प्रस्तुत करते हैं। यद्यपि रुद्र काचन देवता परन्तु वह भगवान् स्वरूप है। श्री भगवान् सर्वव्यापी है। रुद्र के वर्णन में भी उसका सभी स्वरूप प्रकट किया है। देव मनुष्य आदि रूप से जैसी उसकी स्थिति है, वैसे ही पर्णनी, हार आदिरूप से भी उसको ही प्रकट किया है। इस अध्याय में मुख्य रूप से रुद्र के प्रति नमस्कार और प्रार्थना की गई है। शिव का शिवधर्म का अथवा शैवधर्म का प्रसार शुक्लयजुर्वेदसाहित्य इतिहास में बहुत बड़े स्थान को अलंकृत करता है। रुद्र शब्द का अर्थ भीषण अथवा भयङ्कर है। अन्तिम क्षण में जो सभी को रुलाता है वह रुद्ररूप से ही विख्यात है। जन्म समय में स्वयं ही भीषण क्रन्दन करता है और भी जिसके- शब्द से सम्पूर्ण भुवन कम्पन करने लगता है वह रुद्र है। यहाँ दो भाग किये जाते हैं। वहाँ प्रथम भाग में सात मन्त्र है तथा द्वितीय भाग में सात मन्त्र की व्याख्या करते हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढकर आप सक्षम होंगे :

- रुद्रदेव के रूप को समझ पाने में;
- शुक्लयजुर्वेद के रुद्राध्याय को सस्वर पढ़ पाने में;
- रुद्र अध्याय में स्थित मन्त्रों का अर्थ ज्ञान कर पाने में;
- वैदिक मन्त्रों की व्याख्यान की पद्धति को जान सकने में;

टिप्पणियाँ

- रुद्र के माहात्म्य को जान पाने में;
- स्वयं ही मन्त्र की व्याख्या कर पाने में;
- स्वयं ही मन्त्र का अन्वय कर पाने में;
- स्वयं ही मन्त्र में स्थित व्याकरण पदों को जान पाने में;

24.1 मूलपाठ

नमस्ते रुद्र मन्यव उतो तऽइषवे नमः।
बाहुभ्यामुत ते नमः॥१॥

या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी।
तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि॥२॥

यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे।
शिवां गिरित्र तां कुरु मा हिंसीः पुरुषं जगत्॥३॥

शिवेन वचसा त्वा गिरिशाऽच्छावदामसि।
यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मं सुमना असत्॥४॥

अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्।
अहींश्च सर्वान् जम्भयन् सर्वाश्च यातुधान्योऽधराचीः परासुव॥५॥

असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलः।
ये चैनं रुद्रा अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशोऽवैषां हेड ईमहे॥६॥

असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः।
उतैनं गोपा अदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्य्यः स दृष्टो मृडयाति नः॥७॥

नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे।
अथो ये अस्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नमः॥८॥

प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरात्र्योर्ज्याम्।
याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो वप॥९॥

विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ२॥
उत अनेशन्नस्य या इषव आभुरस्य निषङ्गधिः॥१०॥

या ते हेतिर्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः।
तयाऽस्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परि भुज॥११॥

टिप्पणियाँ

परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः।
अथो य इषुधिस्तवारे अस्मन्निधेहि तम्॥१२॥

अवतत्य धनुष्ट्वं सहस्राक्ष शतेषुधे।
निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव॥१३॥

नमस्त आयुधायानातताय धृष्णवे।
उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने॥१४॥

24.1.1 प्रथम भाग : मूलपाठ की व्याख्या- श्लोक 1-5

नमस्ते रुद्र मन्यव उतो तऽइषवे नमः।
बाहुभ्यामुत ते नमः॥१॥

पदपाठ - नमः तेरुद्र मन्यवे उतोऽइत्युतो ते इषवे नमः। बाहुभ्यामिति बाहुऽभ्याम् उततेनमः।

अन्वय का अर्थ - हे रुद्रदेव, ते - आपका, मन्यवे - क्रोध को उद्देश्य करके, नमः -अर्थात् स्तुति करता हूँ, उतः - अथवा, ते - तेरा, इषवे - बाण को उद्देश्य करके, नमः अर्थात नमस्कार करता हूँ। अथवा और भी, ते आपके, बाहुभ्याम् - हाथों से नमस्कार स्तुति करता हूँ।

व्याख्या - पन्द्रहवे अध्याय के चयनमन्त्रों को समाप्त करके सोलहवें में शतरुद्रहोम के मन्त्र कहते है। 'शतरुद्रियहोम उत्तरपक्षस्यापरस्यां स्रक्त्यां परिश्रित्स्वर्कपर्णेनार्ककाष्ठेन शातयन्संततं जर्तिलमिश्रान् गवेधुकासक्तूनजाक्षीरमेके तिष्ठन्नुदङ्नमस्त इत्यधायेन, त्र्यनुवाकान्ते स्वाहाकारो जानुमात्रे, पञ्चान्ते च नाभिमात्रे, प्राक् च प्रत्यवरोहेभ्यो मुखमात्रे, प्रतिलोमं प्रत्यवरोहान् जुहोति प्रमाणेषु नमोऽस्त्विति प्रतिमन्त्रम्' (का. श्रौ. १८/१/१/५)। इसका अर्थ है। हिरण्यशकलैरग्निप्रोक्षणानन्तरं शतरुद्रियसंज्ञो होमः उसकी आहवनीय में प्राप्ता अपवाद को कहते है। उत्तरपक्षपश्चिमकोण में जो परिश्रित जङ्घामात्र आदि पूर्व निखातास्तासु होम। वहाँ विधि। जर्तिलैरारण्यतिल के द्वारा मिश्रित गेहूं के साथ सक्तूनर्कपत्र से आहुति देते है। क्या किया। अर्ककाष्ठ से संतत क्षारपरिश्रित में गिरता हुआ अर्कपत्र को दाहिने हाथ से अर्ककाष्ठ को वाम से लेकर उसमे आहुति डालनी चाहिए। सक्तुस्थान में कही पर बकरी का दुग्ध। उदङ्मुख नमस्त इत्याध्याय से। वहाँ अनुवाक तीन में 'अर्भकेभ्यश्च वो नमः' (क. २६) यहाँ जानुमात्र में परिश्रित स्वाहाकारका विधान करना चाहिए। पञ्चानुवाक के अन्त में श्सुधन्वने च (क. ३६) यहाँ पर नाभिमात्र में परिश्रित स्वाहाकार है। 'नमोऽस्तु रुद्रेभ्यः' (क. ६३) इस प्रत्यवरोहमन्त्र में उससे पहले मुखमात्रपरिश्रित स्वाहाकार है। नमोऽस्त्विति कण्डिका तीन से प्रतिलोम होम। 'ये दिवि' (क.६४) यह मुखमात्र में। 'येऽन्तरिक्षे' (क. ६५) ये नाभिमात्र में। 'ये पृथिव्याम्' (क.६६) ये जानुमात्र में। यह सुत्रार्थ। नमस्ते। षोडश अर्च में अनुवाक एकरुद्रदैव आदि गायत्री तीन अनुष्टुप तीन पङ्क्ति में सात अनुष्टुप में दो जगति में। अध्याय के परमेष्ठिदेवप्रजापति ऋषि। मा नः (क. १५-१६) इन दोनों के कुत्स ऋषि है। हे रुद्र, रुत् दुःखं द्रावयति रुद्रः। अथवा रु गतौ ये गत्यर्थ अथवा ज्ञानार्थ है। रवणं रुत् ज्ञानं राति ददाति रुद्रः ज्ञानम् भाव में क्विप् तुगागम करने पर। रुत् ज्ञानप्रद है। अथवा पापी मनुष्यों को दुःखभोग से रुलाते वे

रुद्र है। हे रुद्र, आपके मन्यु क्रोध के लिए नमस्कार हो। और आपके बाणों के लिए नमस्कार हो। और आपके भुजाओं को नमस्कार हो। आपका क्रोधबाण हाथ हमारी रक्षा के लिए फैल न की हमारे नाश के लिए यह अर्थ है ।।१।।

सरलार्थ - यह रुद्राध्याय का प्रथम मन्त्र है। हे रूद्र तुम्हारे क्रोध को नमस्कार, तुम्हारे आखो को नमस्कार और तुम्हारे बाहुओं को नमस्कार

व्याकरण

- **रुद्रः** - रुद् दुःख को द्रावयति इति रुद्रः।
- पुन रु गतौ इस धातु से गत्यर्थकअथवा ज्ञानार्थकधातु से रुद्रशब्द निष्पन्न होता है। वहाँ रुलाने वाला अथवा ज्ञानको देने वाला रुद्र कहलाता है। यहाँ भाव में क्विप् प्रत्यय होता है।रुत् ज्ञानप्रद को कहते है।
- अथवा पापी मनुष्यों को दुःखभोग से रुलाता है वह रुद्र है।

या तें रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी।
तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिंशन्ताभिचाकशीहि।।२।।

पदपाठ- या ते रुद्र शिवा तनूः अघोरा अपापकाशिनीत्यपापकाशिनी।। तया नः तन्वा शन्तमयेति शऽन्तमया गिरिंशन्तेति गिरिंऽशान्त अभी चाकशीहि।।

अन्वय का अर्थ - रुद्र हे रुद्रदेव, ते - आपका, या-जो, शिवा -कल्याणकारी, अघोरा -घोर उपद्रवो से रहित, अपापकाशिनी-सत्य धर्मो को प्रकाशित करने हारी, तनूः -शरीर, तया- आपका, शन्तमया-अत्यंत सुख प्राप्त कराने वाली, तन्वा- शरीर से, नः- हमको, गिरिशन्त - हे गिरिश, सब और से सुख प्रदान कीजिए।

व्याख्या - हे रुद्र, जो आपका यह इस प्रकार का विशाल शरीर को हे गिरिशन्त, उस विस्तृत कानून आदि से सब को देख सब पर दृष्टि रख। चाकशीतिः पश्यतिकर्मा (नि. ३/११/८)। किस प्रकार की वाणी। शिव शान्त मङ्गलरूप वाली वाणी। जो उपद्रव रहित शांत सौम्य रूप वाली पाप से अतिरिक्त पुन्य का ही प्रकाश करने वाली। जो पुण्यफल को ही देती है पापफल को नहीं यह अर्थ है। कैलास पर्वत पर स्थित अच्छे सुख से प्राणियों का विस्तार करने वाले रूद्र, वाणी में स्थित अथवा उसको विस्तृत करने वाले, मेघ में स्थित होकर वर्षा द्वारा समृद्धि को बढाने वाले, पर्वत पर रहने वाले गिरिश। जो भुत भविष्य और वर्तमान सब कुछ जानने वाले सर्वज्ञ हैं। 'अम गतौ भजने शब्दे' कर्तरि क्तः। गिरिशश्चासावन्तश्च गिरिशन्तस्तत्संबुद्धिः। शकन्ध्वादित्वात्पररूपम् (पा. ६/१/९४) किस प्रकार का विस्तार। शांत रूप से और सुखरूप से ।।२।।

सरलार्थ - यह रुद्राध्याय का द्वितीय मन्त्र है। हे रूद्र तुम पर्वत पर रहने वाले हो तुम्हारा जो कल्याण रूप सौम्य है और पाप के फल को न देकर, पुण्य फल ही देता है अपने उस मगलमय देह से हमारी और देखो।

व्याकरण

- **गिरिशन्त** – गिरी पर्वत पर सोने वाला अथवा रहना वाला, अर्थात् कैलास नाम पर्वत पर रहकर के, सुख को बढाने वाला गिरिशन्तः। अथवा गिरी वाणी के सुख को बढाने वाला विस्तार करने वाला यह अर्थ है।

यामिषुं गिरिशन्त हस्तें बिभर्ष्यस्तंवे।
शिवां गिंरित्र तां कुंरु मा हिंसीः पुरुंषं जगंत्॥३॥

पदपाठ – याम् इषुम् गिरिशन्तेतिगिरिऽशन्त हस्तें बिभर्षि अस्तंवे शिवाम् गिरित्रेति गिरिऽत्र ताम् कुरु मा हिंसीः पुरुंषम् जगंत्।

अन्वय का अर्थ – गिरिशन्त – हे गिरिश, याम् – जो बाण को, अस्तवे-फेकने के लिए, हस्ते-हाथ में, बिभर्षि- धारण करता है, गिरित्र – हे पर्वत के रक्षक, ताम् – उसको, शिवां-मंगलकारी करो। पुरुषं- पुरुष को, जगत्- पृथिवी को, मा- मत, हिंसीः – मारो।

व्याख्या – हे गिरिशन्त, आप जिस बाण को हाथ में धारण करते हो। क्या करोगे। अस्तवे 'असु क्षेपणे' तुमर्थे तवेप्रत्ययः। शत्रुओं पर फेंकने के लिए यह अर्थ है। कैलास पर्वत में स्थित होकर सभी प्राणियों की रक्षा करने वाले वह शिव का बाण हमारे लिए कल्याणकारी हो। और पुरुषके पुत्रपौत्रादिजगत् जङ्गम अन्य गाय आदि पशुओं को मत मारो ॥३॥

सरलार्थ – यह रुद्राध्याय का तृतीय मन्त्र है। हे रूद्र तुम पर्वत पर या मेघ के अंदर स्थित हो, तुम सब प्राणियों के रक्षक हो अपने जिस बाण को प्रलय के निमित हाथ में ग्रहण करते हो उस बाण को विश्व का कल्याण करो तुम हमारे पुरुषों को और पशुओं को हिंसित मत करो।

व्याकरण

- **अस्तवे** – यहाँ असु क्षेपणे इस धातु से तुमर्थ में तवेप्रत्यय होता है। शत्रुओं पर फेकने के लिए।

शिवेन वचंसा त्वा गिरिशाऽच्छांवदामसि।
यथां नः सर्वमिज्जगंदयक्ष्मं सुमना असंत्॥४॥

पदपाठ – शिवेनं वचंसा त्वा गिरिंश अच्छं वदामसि यथां नः संर्वम् इत् जगंत् अयक्ष्मम् सुमनाइतिं सुऽमनाः असंत्।

अन्वय का अर्थ – गिरिश – हे रुद्रदेव, शिवेन – कल्याणकारी, वचसा- वचन से, त्वा – तुझको, अच्छ – अच्छा, वदामसि – कहते है, यथा – जैसे, नः – हमारा, सर्व – सम्पूर्णजगत् – मनुष्यादि और संसार, अयक्ष्मम् – क्षय रोग आदि से रहित, सुमनाः – प्रसन्नचित हो।

व्याख्या – पर्वत पर रहने वाले हे गिरिश, कल्याण वचन से, मङ्गल स्तुतिरूप से हम तुम्हे प्राप्त करते है हम कहते है या हम तेरी प्रार्थना करते है। क्या कहते है यह बताते है।जो हमारा यह संसार जङ्गम मनुष्य पशु आदि जिस प्रकार से यक्ष्मा आदि रोगों से रहित होकर, नीरोग होकर कल्याणकारी सुंदर मन वाले जिस प्रकार रहे वैसे ही बना दो। सुमन:शब्द में पुंस्त्वमार्ष जगद्विशेषण होने से।४।।

सरलार्थ – यह रुद्राध्याय का चतुर्थ मन्त्र है। हे कैलासपते मगलमय स्तुति रूप वाणी से तुम्हे प्राप्त होने के लिए प्रार्थना करते है सभी संसार जैसे हमारे लिए आरोग्य प्रद और श्रेष्ठ मन वाला हो सके, वैसा करो।

व्याकरण

- **असत्** – अत्र लेट्लकार, अत: लेटोडाटौ इससे अडागम, इलोप होता है।

अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्।
अहींश्च सर्वान् जम्भयन् सर्वांश्च यातुधान्योऽधराची: परासुव।।५।।

पदपाठ – अधी अवोचत् अधिवक्तेत्यधिऽवक्ता प्रथम: दैव्य: भिषक् अहीन् च सर्वान् जम्भयन् सर्वा: च यातुधान्यइतियातुऽधान्य: अधराची: परा सुव।।

अन्वय का अर्थ – अधिवक्ता – सबसे उत्तम बोलने वाला, प्रथम: – मुख्य, दैव्य:– देवो में प्रसिद्ध, भिषक् – चिकित्सक, अधि अवोचत्–अधिक उपदेश दे। सर्वान् – सभो को, अहीन् सर्प के तुल्य प्राणान्त करने हारे रोगों को, च – और, जम्भयन् – औषधियों से हटाते हुए, सर्वा: – सम्पूर्ण, च अपि – और भी, अधराची: – नीचे गति को पहुचाने वाली, यातुधान्य: – रोगकारिणी औषधी राक्षससमूह को दूर फेको।

व्याख्या – रुद्र आप सबसे पहले आज्ञापक होकर मुझे आज्ञा दें, आपका कथन मेरे लिए प्रधान हो। किस प्रकार। अत्यधिक बोलने वाला। प्रथम सभी में मुख्य पूज्य होने से। देवों के लिए हितकारी। रोग के नाश के लिए स्मरण से ही औषधि के द्वारा रोग का नाश हो जाता है। इस प्रकार परोक्ष कहकर प्रत्यक्ष कहते है। हे रुद्र, सब प्रकार की प्रजाओं को पीड़ा, रोग, कष्ट आदि देने वाले दुष्टों को हमसे दूर करो। क्या करके। सभी सांपों को विषवैद्य और गारुडिक वश में करता है उसी प्रकार तू भी इन सभी को वश में कर, और जो बुरे कर्म में लगे हुए हैं, जो अधोगति की और गमन करते हैं ऐसे दुराचारियों को राष्ट्र से दूर करें। सर्प आदि और दुष्ट मनुष्यों से सदैव रक्षा करना।।५।।

सरलार्थ – यह रुद्राध्याय का पञ्चम मन्त्र है। अधिक उपदेशकारी, सब देवताओं में प्रथम पूज्य देवताओं के हितैषी, स्मरण से ही सब रोगों को दूर करने वाले चिकित्सक के समान रूद्र हमारे कार्यों को अधिकता से वर्णन करें और सब सर्पादी को नष्ट कर अधोगति वाले राक्षसों को हमसे दूर भगावें।

टिप्पणियाँ

व्याकरण

- **अध्यवोचद्** - अधिपूर्वक वच्-धातु से लङ् प्रथमपुरुष एकवचन में।
- **भिषक्** - रोग को दूर करने वाले भिषग्वैद्य चिकित्सक।

पाठगत प्रश्न 24.1

1. रूद्र का शरीर किस प्रकार का है?
2. रुद्र का बाण किसके लिए है?
3. स्वर्ग का मुख्य वैद्य कौन है?
4. यातुधान्यशब्द का क्या अर्थ है?

24.1.2 मूलपाठ की व्याख्या- श्लोक 6-7

असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलः।
ये चौनं रुद्रा अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशोऽवैषां हेड ईमहे॥६॥

पदपाठ - असौ यः ताम्रः अरुणः उत बभ्रुः सुमङ्गलइतिसुऽमङ्गलः ये च एनम् रुद्राः अभितः दिक्षु श्रिताः सहस्रशः इति सहस्रऽशः अवेति एषाम्। हेडः ईमहे।

अन्वय का अर्थ - असौ - वह, यः - जो, ताम्रः- ताम्रवत, अरुणः - सुंदर गौरांग, उत - अथवा, बभ्रुः - पीला वा धुमेला युक्त वर्ण युक्त, सुमङ्गलः -मङ्गलमय, ये च पुनः, सहस्रशः - हजारो, रुद्राः - दुष्टों को रुलाने हारे, एनम् - इस रूद्र के, अभितः - चारो ओर, दिक्षु दिशाओं में, श्रिताः - आश्रय से वसते हो, एषाम् - इनका, हेडः - शत्रुओं का अनादर करने हारे, अव ईमहे - विरुद्धाचरण की इच्छा नहीं करते है।

व्याख्या - यहाँ आदित्यरूप से रुद्र की स्तुति की गई है। जो यह सूर्य प्रत्यक्ष रुद्र का रूप है। च पुन अर्थ में। दुष्टों को रुलाने वाले चारो दिशाओं में इसके हजारों गण सूर्य रूपी किरने हमारे द्वेष, रोष क्रोध को दूर करें। हेड इति क्रोधनाम। 'अभिसर्वतसो' (पा. २/३/२) द्वितीया। यह किस प्रकार का है। सुनहरे रंग का, उदय काल में अत्यन्तलाल। और अस्त काल में भी लाल। और भी अन्य समय में पीले रंग का। अच्छा कल्याण है जिसका वह मङ्गलरूप सूर्य सभी की मगंल कामना से प्रवृत होता है ॥६॥

सरलार्थ - यह रुद्राध्याय का छठाँ मन्त्र है। यह रूद्र सूर्य में प्रत्यक्ष, उदय काल में अत्यन्त लाल और अस्त काल में वरुण वर्ण वाला है, यह मध्याह्न काल में पिंगल वर्ण में रहता है, उदय काल में यह प्राणियों के कर्मों का विस्तार करता है इनके सहस्त्र अंश रूप रश्मिया हैं ये सब ओर दिशाओं में स्थित हैं हम इनके क्रोध को शांत करने के लिए यत्न शील रहते हैं।

व्याकरण

- **हेड** - क्रोधका पर्यायवाची शब्द है।
- **ईमहे** - ई-धातु से आत्मनेपद लट्-लकार उत्तम पुरुष बहुवचन का रूप है।
- **श्रिताः** - शृङ्-धातु से तप्रत्ययान्त का रूप है।

असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः।
उतैनं गोपा अदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्य्यः स दृष्टो मृडयाति नः॥७॥

पदपाठ - असौ यः अवसर्प्पतीत्यवऽसर्पति नीलग्रीवइतिनीलऽग्रीवः विलोहितइतिविऽलोहितः उत एनम् गोपाइतिगोऽपाः अदृश्रन् अदृशन् उदहार्यइत्युदऽहार्यः सःदृष्टः मृडयाति नः॥७॥

अन्वय का अर्थ - असौ - वह, यः नीलग्रीवः - जिसका कण्ठ नीला है, विलोहितः-विविध प्रकार के शुभ गुणों से युक्त, अवसर्पति - दुष्टों से विरुद्ध चलता है, उत -अथवा, एनम् - ये, गोपाः - गोपालक, अदृशन् -देख करके, उदाहार्यः - जल लाने वाली स्त्रियां, अदृश्रन् - देख के, दृष्टः - देखा हुआ, सः - वह सूर्यदेव, नः - हम सब धार्मिकों को, मृडयाति - सुखी करें।

व्याख्या -जो यह सूर्य उदय और अस्त होता हुआ निरंतर चलता रहता है। यह गोपा अथवा गोपाल भी वेदोक्त संस्कारहीन अदृश्य को देखते है। उदाहार्यः उदकं हरन्ति ता उदहार्यः 'मन्थौदन-' (पा. ६/३/६०) इत्यादि से उदक को उद आदेश। जल को लाने वाली स्त्रियाँ भी उसके स्वरूप को देखती है। गोपाल स्त्री आदि यह उसका अर्थ है। दृशेर्लुङि 'इरितो वा' (पा. ३/१/५७) इति च्लेरङ् रुगागमश्छान्दसः। किस प्रकार। नीलग्रीव विषधारण करने से नीली गर्दन कंठ है जिसका अस्तमय में नीलकण्ठ के समान लक्ष्य करके कहा। विशेष रूप से लाल। वह रुद्र हमको देखता हुआ हमें धन धान्य से पूर्ण करे। वह रूद्र हमे सुखी बनाए ॥७॥

सरलार्थ - यह रुद्राध्याय का सातवाँ मन्त्र है। इन रूद्र की ग्रीवा विष धारण से नीली हो गई थी। यह आदित्य रूप से उदय अस्त करते है। इनके दर्शन वेदोक्त कर्म से हीं गोप तथा जल ले जानी वाली महिलायें भी करती है। वे रूद्र दर्शन देने के लिए आते ही, वे हमारा कल्याण करें।

व्याकरण

- **उदहार्यः** - जल का हरण करने वाला जो हैं उसे उदहार्य कहते हैं अर्थात सूर्य, मन्थोदनसक्तुबिन्दुवज्रभारहारवीवधगाहेषु च इससे (पा. ६.३.६०) उदक को उद आदेश।
- **अदृश्रन्** - दृश लुङ में इरितो वा (पा.३.१.५७) इस सूत्र से च्ले को अङ्, रुक आगम छन्द में।

टिप्पणियाँ

पाठगत प्रश्न 24.2

1. रुद्र के कितने वर्ण है?
2. हजार रश्मिरूप रुद्र कौन है?
3. रुद्र के कण्ठ का क्या वर्ण है?
4. गोपाल और स्त्री क्या देखती है?

24.2 द्वितीयभाग : मूलपाठ की व्याख्या - श्लोक 8-11

नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे।
अथो ये अस्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नमः॥८॥

पदपाठ - नमः अस्तु नीलग्रीवायेतिनीलऽग्रीवाय सहस्राक्षायेति सहस्रऽअक्षाय मीढुषे अथोत्यथो ये अस्य सत्वानः अहम् तेभ्यः अकरम् नमः॥८॥

अन्वय का अर्थ - नीलग्रीवाय - नीलकण्ठ वाला, सहस्राक्षाय - हजार नेत्रों वाला, मीढुषे - पराक्रम युक्त, नमः - स्तुति करता हूँ अस्तु - वैसे ही हो। अथो - उसके बाद, अस्य - रुद्रदेव का, ये सत्वानः - जो सेवक हैं, अहम् तेभ्यः नमः अकरम् - मैं उनको भी नमस्कार करता हूँ।

व्याख्या - नील गर्दन वाले और नीलकण्ठवाले रुद्र के लिए नमस्कार हो। किस प्रकार के लिए। सहस्र नेत्र है जिसके ऐसा इन्द्रस्वरूप वाले के लिए। वह वर्षा करने वाला कर्ता है, पर्जन्यरूप है यह उसका अर्थ है। अथवा तरुण के लिए। अथ और भी इस रुद्र के जो ये सामर्थ्यवान, शक्तिशाली सेवक उनके लिए भी मैं नमस्कार करता हूँ। 'कृञ् कृतौ' शप् लङ उत्तम पुरुष एकवचन में ॥८॥

सरलार्थ - यह रुद्राध्याय का आठवाँ मन्त्र है। नीले कंठ वाले, सहस्त्र नेत्र वाले, सेचन समर्थ पर्जन्य रूप रूद्र के निमित नमस्कार हो।

व्याकरण

- **मीढुषे** - मिमेहेति मीढ्वन्, तस्मै 'मिह सेचने' दाश्वान्साह्वान्मीढ्वांश्च (पा ६.१.१२) इससे क्वसु अन्त निपात है।

प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरात्र्योर्ज्याम्।
याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो वप॥९॥

पदपाठ - प्रेति मुञ्च धन्वनः त्वम् उभयोः आर्त्न्योः ज्याम् याः च ते हस्ते इषवः परेति ताः भगवइतिभगऽवः वप॥९॥

अन्वय का अर्थ - भगवः - हे भगवन्, त्वम् - आप रुद्रदेव, धन्वनः - धनुष, उभयोः - दोनों और से, अर्त्न्योः पूर्व पर किनारों की, ज्याम् - प्रत्यंचा को छोड़, च - और, ते आपके, हस्ते - हाथ में, याः इषवः - जो बाण है, ताः परावप दूर करो।

टिप्पणियाँ

व्याख्या – हे भगवान भग आदि छ ऐश्वर्य है जिसके पास वह भगवान्। 'मतुवसो रुः संबुद्धौ छन्दसि' (पा. ८/३/१) इससे रुत्व हुआ। 'ऐश्वर्य समग्र धर्मस्य यशसः श्रियः। ज्ञानवैराग्ययोश्चौव षण्णां भग इतीरणा' ऐसा कहा गया। हे भगवन् धनुष की दोनों कोटियों में जयदायिनी हो। और जो तेरे हाथ में बाण है उनको आप दूर तक शत्रुओं पर फेकें ।।९।।

सरलार्थ – यह रुद्राध्याय का नौंवा मन्त्र है। हे भगवन धनुष की दोनों कोटियों में स्थित प्रत्यंचा को उतारलो और अपने हाथ में लिए बाणों को भी त्याग दो।

व्याकरण

- **प्रमुञ्च** – प्र-उपसर्गपूर्वक से मुञ्च का लोट्मध्यमपुरुष एकवचन में। मोचय यह अर्थ है।

विज्यं धनुः कपर्द्दिनो विशल्यो बाणवाँ२।।
उत अनेशन्नस्य या इषव आभुरस्य निषङ्गधिः।।१०।।

पदपाठ – विज्यमिति विऽज्यम् धनुः कपर्दिनः विशल्यऽइतिवि शल्यः बाणवानिति बाणऽवान् उत अनेशन् अस्य या इषवः आभुः अस्य निषङ्गधिः।

अन्वय का अर्थ – कपर्दिनः – जटाधारी, धनुः –धनुष, विज्यं – प्रत्यंचा से रहित, बाणवान् –बाण से युक्त हो, विशल्यः – बाण के अग्रभाग से रहित हो, उत – अथवा, अस्य याः इषवः – इसके जो बाण हैं वे, अनेशन् – नष्ट हो जावें, अस्य निषङ्गधिः – बाणादि कोष खाली न हो।

व्याख्या – जटाजूट है जिसकी ऐसा रुद्र है, उसका धनुष प्रत्यंचा रहित हो। उसकी प्रत्यंचा टूट जाए। और बाण है जिसके पास ऐसा वह बाणवान् (रूद्र) उसके बाण भी विफल हो जाए। बाणके आगे का भाग तेज नुकीला हमारे लिए न हो। इस रुद्र का जो बाण है वह नष्ट हो सकते है 'णश अदर्शने' नशेरत एत्व को अङि वा इत्येत्वम् पुषादित्व होने से च्लेरङ्। इस रुद्र का तलवार रखने का स्थान भी खाली रहे हमारे लिए अर्थात् इनकी म्यान में तलवार न हो। रुद्र हमारे प्रति सभी शस्त्र से रिक्त हो ।।१०।।

सरलार्थ – यह रुद्राध्याय का दसवाँ मन्त्र है। इन जटाधारी रूद्र का धनुष प्रत्यंचा से रहित हो जाए और तरकस फल वाले बाणों से खाली हो, इनके जो बाण हैं, वे दिखाई न पड़े इनके खड्ग रखने का स्थान भी खाली हो, हमारे लिए रूद्र हथियारों को नितांत त्याग दे।

व्याकरण

- **कपर्दिनः** – कपर्दः अस्यास्तीति विग्रह करने पर अत इनिठनौ इससे इनिप्रत्यय करने पर निष्पन्नकपर्दिन्-शब्द का षष्ठी एकवचन का रूप है।
- **अनेशन्** – नश्यन्तु इति 'णश अदर्शने' इस धातु से नश होने से अत अङि वा इससे पुषादि होने से च्लि को अङ्।
- **कपर्दिनः** – उग्र कपर्दी श्रीकण्ठ शितिकण्ठः कपालभृत् इत्यमरः।

टिप्पणियाँ

या ते॑ हे॒तिर्मी॑ढुष्टम॒ हस्ते॑ ब॒भूव॑ ते॒ धनुः॑।
तया॒ऽस्मान्वि॒श्वत॒स्त्वम॑य॒क्ष्मया॒ परि॑ भुज॥११॥

पदपाठ – **या ते॑ हे॒तिः मी॒ढुष्टम॒। मी॒ढु॒स्त॒मेति॑मीढुः॒ऽतम॒ हस्ते॑ ब॒भूव॑ ते॒ धनुः॑ तया॑ अ॒स्मान् वि॒श्वतः॑ त्वम् अ॒य॒क्ष्मया॑ परीति॑ भु॒ज।**

अन्वय का अर्थ – मीढुष्टम – अत्यन्त शक्तिशाली, ते – आपका, हस्ते – हाथ में, या धनुः – जो धनुष हेतिः वज्र धनु – सम्बन्धी – आयुध हैं, वे निरर्थक, तया अयक्ष्मया – उस क्षय रोग से रहित आयुध से, त्वम् – आप स्वयं, अस्मान् – हमारी, विश्वतः – सब और से पालन कीजिए।

व्याख्या – अतिशयेन मीढ्वान्मीढुष्टमः 'तसौ मत्वर्थे' (पा. १/४/१९) इससे भसंज्ञा होने पर 'वसोः संप्रसारणम्' (पा. ६/४/३१) इससे संप्रसारण हुआ। षत्वष्टुत्व होने पर। हे शक्तिशाली रूद्र, आपके हाथ में जो धनुष या धनूरूप आयुध हैं। एक तेपद पादपूरण के लिए। उस धनूरूप वज्र से हमारी सब और से रक्षा कीजिए। भुजेर्विकरणव्यत्यय करने पर शप्रत्यय। वो किस प्रकार की। जिस प्रकार किसी रोगी को यक्ष्मा हो और फिर वैद्य उसको दूर करता है उसी प्रकार उपद्रव को शांत करें॥११॥

सरलार्थ – यह रुद्राध्याय का ग्यारहवाँ मन्त्र है। हे सिचनशील रूद्र, तुम्हारे हाथों में जो धनुष और बाण है, उन्हें उपद्रव रहित कर सब और से हमारा पालन करो।

व्याकरण

- **बभूव** – भू-धातु से लिट्लकार में प्रथमपुरुष एकवचन का रूप है।
- **मीढुष्टम** – अतिशयेन मीढ्वान्मीढुष्टमः 'तसौ मत्वर्थे' (पा. १/४/१९) इससे भसंज्ञा होने पर 'वसोः संप्रसारणम्' (पा. ६/४/३१) इससे संप्रसारण। षत्व को ष्टुत्व हुआ।
- **धनुः** – षकारान्त नपुंसक धनुष-शब्द का रूप है।

पाठगत प्रश्न 24.3

1. सहस्र नेत्र किसके है?
2. उपासकों के द्वारा क्या दूर फेंकने के लिए रुद्र से प्रार्थना की?
3. 'मीढस्तुम' इसका क्या अर्थ है?
4. रुद्र के धनुष सम्बन्धि आयुध किस प्रकार के है?
5. कपर्दिनः इसका निर्वचन करो?
6. अयक्ष्मा इसका अर्थ लिखो।

टिप्पणियाँ

24.2.1 मूलपाठ की व्याख्या- श्लोक 12-14

परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः।
अथो य इषुधिस्तवारे अस्मन्निधेहि तम्॥१२॥

पदपाठ - परीति ते धन्वनः हेतिः अस्मान् वृणक्तु विश्वतः अथो इत्यथो यः इषुधिरितीषुऽधिः तव आरे अस्मत् नीति धेहि तम्।

अन्वय का अर्थ - ते - आपके, धन्वनो हेतिः - धनुष -सम्बन्धि -आयुध, विश्वतः - चारों और से, नः - हमको, परिवृणक्तु - छोड़ दें। अथो उसके बाद, आपके जो बाण है, तम्- उसको, अस्मत् - हमारे समीप से, निधेहि - निरन्तर धारण कीजिए, उस बाण को हमारे हाथ में रख दीजिए।

व्याख्या - हे रुद्र, आपका धनुष का बाण हमारी सब और से रक्षा करे। वह हमारी हिंसा न करे। 'वृजी वर्जने' रुधादि होने से श्नम् प्रत्यय। और भी जो आपके तर्कस है उसको भी हमसे दूर रखें ॥१२॥

सरलार्थ - यह रुद्राध्याय का बारहवाँ मन्त्र है। हे रूद्र तुम्हारे धनुष से सम्बन्धित बाण हमे सब और से त्याग दे, तुम अपने तरकसों को हमसे दूर ही रखो।

व्याकरण

- परि ... वृणक्तु-, यहाँ परि यह उपसर्ग, मध्य पदो का व्यवच्छेदतो वैदिकप्रयोग होने से साधु है। वृणक्तु यहाँ वृजी वर्जने इस धातु से रुधादि होने से श्नम्।
- **इषुधिः** - तूणोपासङ्गतूणीरनिषङ्गा इषुधिर्द्वयोः इत्यमरः।

अवतत्य धनुष्ट्वं सहस्राक्ष शतेषुधे।
निशीर्य्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव॥१३॥

पदपाठ - अवतत्येत्यवऽतत्य धनुः त्वम् सहस्राक्षेतिसहस्र अक्ष शतेषुध इति शत इषुधे निशीर्य्येति निऽशीर्य शल्यानाम् मुखा शिवः नः सुमनाइतिसुऽमनाः भव।

अन्वय का अर्थ - सहस्राक्ष - हे सहस्र नेत्र वाले, शतेषुधे सौ बाण से युक्त, त्वम् - आपका, धनुः -धनुष, अवतत्य विस्तार करके, शनल्यानां - बाणसमूह का, मुखा - अग्रभाग को, निशीर्य- अच्छि प्रकार से तेज करके, नः - हमारे, प्रतिशिवः शान्त, और कल्याणकारी हो।

व्याख्या - हे हजार नेत्र वाले और सौ बाण से युक्त रूद्र, हे शतेषुध, आप हमारे प्रति कल्याणकारी शान्त और मंगलमय हों। अनुग्रहित करें। क्या करके। धनुष को तान कर और बाणों के फलों के मुख को खूब तेज करके भी हमारे लिए कल्याणकारी हों।॥१३॥

सरलार्थ - यह रुद्राध्याय का तेरहवाँ मन्त्र है। हे सहस्त्र नेत्र वाले रूद्र, तुम्हारे पास सैकड़ो तरकस है, तुम अपने धनुष को प्रत्यंचा रहित कर बाणों के फल को भी निकाल दो इस प्रकार हमारे लिए कल्याणकारी और श्रेष्ठ मन वाले हो जाओ।

टिप्पणियाँ

व्याकरण

- **निशीर्य** – 'शृ हिंसायाम्' 'समासेऽनञ्पूर्वे क्त्वो ल्यप्' 'ऋत इद्-धातोः' (पा. ७/१/१००) इति।
- **शतेषुधे** – सौ बाण हैं जिसके पास शतेषुधि। हे शतबाण से युक्त यह अर्थ है।

नम॑स्त आयु॑धायाना॑तताय धृ॒ष्णवे॑।
उ॒भाभ्या॑मु॒त ते॒ नमो॑ बा॒हुभ्यां॒ तव॒ धन्व॑ने॥१४॥

पदपाठ – नमः॑ ते॒ आयु॑धाय अना॑तताय धृ॒ष्णवे॑ उ॒भाभ्या॑म् उ॒त ते नमः॑ बा॒हुभ्या॒मिति॑बा॒हुऽभ्या॑म् तव॑ धन्व॑ने॥

अन्वय का अर्थ – ते – आपका, अनातताय – अपने आशय से गुप्त संकोच में रखने, धृष्णवे –प्रगल्भता को प्राप्त होने वाले, आयुधाय नमः –आयुध को उद्देश्य करके नमस्ते करते हैं, उत – अथवा, ते – आपके, उभाभ्याम् बाहुभ्यां – दोनों हाथों को, नमः – स्तुति करता हूँ, तव धन्वने और आपके धनुष को भी नमस्कार करता हूँ।

व्याख्या – हे रुद्र, आपके आयुध के लिए नमस्कार हो। आपके बाण के लिए नमस्कार हो। किस प्रकार का। अपने आशय को गुप्त रखने वाले के लिए। प्रगल्भता को प्राप्त होने के लिए। धृषेः क्नुप्रत्यय है। शत्रुओं को मारने में प्रवृत होने वाले हो इस प्रकार के आयुध के लिए। और भी आपकी भुजाओं को नमस्कार, आपके धनुष को भी नमस्कार। उनका भी अत्यंत विस्तार हो।।१४।।

सरलार्थ – यह रुद्राध्याय का चौदहवाँ मन्त्र है। हे रूद्र तुम्हारे धनुष पर चढ़े बाण को नमस्कार है तुम्हारे दोनों बाहुओं को और शत्रुओं को मारने में कुशल धनुष को भी मेरा नमस्कार।

व्याकरण

- **उभाभ्याम्** – उभशब्द का नित्यद्विवचनान्त है।
- **उत** – यह अव्यय पद है। अर्थाः – अत्यर्थम्। विकल्पः। समुच्चयः। वितर्कः। प्रश्नः। पादपूरणम्।

पाठगत प्रश्न 24.4

1. निधेहि इसका अर्थ लिखिए।
2. धन्वनो हेतिः इसका क्या अर्थ है?
3. धनुष्ट्वम् इसका सन्धि विच्छेद करो।
4. निशीर्य यहाँ पर क्या प्रत्यय है?
5. उपासक रुद्र का क्या उद्देश्य करके नमस्कार करते है?

24.3 रुद्र देवता का स्वरुप और वैशिष्ट्य

शुक्ल यजुर्वेद में रुद्र अध्याय में रुद्र देवता का स्वरूप तथा वैशिष्ट्य की विस्तार से समालोचना की है। शैवधर्म की उत्पति का तथा प्रसार के इतिहास में शुक्लयजुर्वेद का अत्यन्त महत्त्व है, यहाँ लेशमात्र भी सन्देह नहीं है। शुक्लयजुर्वेदसंहिता का सोलहवाँ अध्याय रुद्राध्यायनाम से प्रसिद्ध है। रुद्रशब्द का अर्थ: भीषण अथवा भयङ्कर है। पापी मनुष्यों को दु:खभोग से रुलाते है वह रुद्र है। और दु:ख को दूर करता है वह रुद्र है। अथवा 'रु गतौ' यह गत्यर्थ और ज्ञान अर्थ में है। गमन करने वाला अथवा ज्ञान को प्राप्त कराने वाले रुद्रभाव में क्विप् तुक आगम। रुत् अथवा ज्ञानप्रद है।

ऋग्वेद में रुद्र अन्तरीक्षस्थान के देव, मरुतो के पिता के रूप में प्रसिद्ध है। शुक्लयजुर्वेद के चार सूक्त में तथा एकसूक्त भागमात्रसोमदेव के साथ उसकी स्तुति दिखाई देती है। ऋग्वेद में भी रुद्र के भयङ्कर रूप का अनेक स्थल में वर्णन है। वैदिकदेवता का बाह्यप्रतीक प्रत्येक एक एक प्राकृतिक घटना रूप में है। उस रुद्रदेव का प्रतीक वज्र है। अत: वज्र का अधिष्ठाता देवता रुद्र जगत प्रपञ्च का स्वामी रूप से प्रसिद्ध है। वज्र का उत्पन्नकाल में अर्थात् वज्रपतनकाल में उसका भीषणशब्द से त्रिभूवन भयभीत होता है। यह ही घटना रूपक आवरण से कहते हैं की जो रुद्र जन्म-क्षण में भीषण चित्कार करता है। वज्र के साथ भीषण-विनाश शब्दों का नित्य संम्बद्ध है। उससे उसका अधिष्ठाता देव रुद्र भीषण और गर्जनशील है। ऋग्वेद में रुद्रदेवता को उद्दिश्य करके स्तुतिनिवेदकसूक्त में हमेशा भयानकरूप से अथवा संहारकरूप से यह प्रकट होता है। उस रुद्र का रुद्ररूपदर्शन के साथ उसका कल्याणमयरूप का भी वर्णनवेद में अनेक जगह प्राप्त होता है। जैसे वह वैद्यश्रेष्ठ इससे भी जाना जाता है। तथा वेद में कहा गया है -**भिषक्तं त्वां भिषजां शृणोमि** (ऋ २।३३।४)। ऋग्वेद के किसी एक मन्त्र में (२।३३।२) रुद्र को उद्देश्य करके प्रार्थना भी की गई है, जैसा कहा गया है - **शतं हिमा अशीय भेषजेभिः** इति अर्थात् हे रुद्रदेव जिससे हम तेरे द्वारा दी गई औषधि से सौ वर्ष जिन्दगी बितातें हैं। भीषण रुद्र का वेद में चिकित्सक होने से वर्णन में उसका कल्याणरूप का भी परिचय प्राप्त होता है। उससे ही वेद में भेषज और जलाष इन दो शब्द का रुद्रसम्पर्क में प्रयोग होता है।

रुद्रदेव के चारित्रिक वर्णन भी ऋग् यजुर्वेदभेद से भिन्न होता है। जैसे ऋग्वेद में रुद्र के संहारक होने का अधिकवर्णन है। और भी यजुर्वेद में **घोरः घोरतरः** तथा **शिवः शिवतरः** इति। और वह यजुर्वेद में शिव-शङ्कर-मयस्कर-शम्भव-मयोभव आदि कल्याणवाचकसंज्ञा के द्वारा स्तुति करते हैं। प्रत्येक विशेषणवाचकशब्द का अर्थ कल्याणजनितसुख है। जो रुद्र है वह ही शिव है। किन्तु शुक्लयजुर्वेद में शिवरुद्र के मध्य में विपरीत और उनका समन्वय दिखाई देता है। केवल आर्यो का ही नहीं अनार्यों का और अन्य मनुष्यों के देवतारूप से उस रुद्र का वर्णन है। केवल उच्च वर्णो का ही नहीं अपितु कुलालों का, लौहकारों का और व्याध आदि का वह देव और पालक है। केवल मनुष्यों का अपितु समस्त प्राणियों का जैसे गाय, घोड़े, कुते आदि का वह ही पालक

है। केवल सज्जनों का नहीं अपितु दुष्टों का और लुटेरों का भी देवता और पालक वह ही है। उससे उस रुद्र में अनेक विपरीत धर्मों का एक ही जगह समावेश दिखाई देता है। और वह आर्य-अनार्यों का सज्जन और दुष्टों का वह सभी का उपास्य है। एक ही वह शिव शान्त पालक और उपास्य है, अन्य वह रुद्र भीषण और संहारक है। शुक्लयजुर्वेद में रुद्र सगुणदेवों का अतिक्रमण करके निर्गुण परमेश्वर रूप में परिणत हुए।

रुद्र अध्याय में अनार्यलुण्ठक अन्य आदि मनुष्यों का उपासक और पालकरूप में रुद्र का वर्णन है। इसलिए आदि में वह रुद्र अनार्यों का उपास्य था और बाद में आर्यों का वह पूज्य हुआ, इसलिए वह आर्यो का और अनार्यों का उपास्य है ऐसा कुछ पण्डित मानते है। परन्तु ऋग्वेद में रुद्रसम्पूर्ण आर्यदेव है। कुछ ब्राह्मणग्रन्थों के द्वारा जाना जाता है की वह आर्य और अनार्य दोनों धर्म में रुद्रदेव की पूजा प्रचलितथी।

शुक्लयजुर्वेद में रुद्राध्याय काव्यसौन्दर्य से मण्डित है। इस अध्याय में रुद्र पशुपति-शम्भु-शिव-शङ्कर-गिरिश- गिरिशन्त- शितिकण्ठ-नीलग्रीव-कपर्दि-आदि अनेक नामों से अलंकारित हैं। ऋग्वेद में रुद्र वज्र का अथवा वायु का देवता है। शुक्लयजुर्वेद में केवल वज्र का ही नहीं वायु के साथ ही नहीं अपितु सूर्य के साथ भी रुद्र का अभिन्नत्व अनेक मन्त्रों के द्वारा प्रतिपादित किया है। वहाँ रुद्र सूर्य का ही एक अंश है। उससे सूर्य उदय अस्तचल के अनुसार से प्रत्येक मुहूर्त को पृथक् पृथङ् नाम के साथ भी उसकी स्तुति की है। सूर्योदयकाल में अस्तांचलसमय में सूर्य की हजार किरणें स्पष्ट होती है। ऋषिरूप का कवि कल्पना के साथ सूर्यविम्ब मस्तक के समान और जटा सूर्य की किरणें के समान चारो और फैली हुई है। कपर्दी जटाशब्द का वाची है। जिसकी जटा है वह कपर्दी कहलाता है। उससे सूर्य के साथ एकात्मभूतरुद्र का अन्य नाम कपर्दी है (१६।१०)। (रुद्राध्याय के सातवें मन्त्र में काव्यसौन्दर्य का)। अस्तगामी सूर्यरूप से रुद्र का नीलग्रीव इस नाम की उत्पत्ति हुई है। अस्ताचलसमय में आकाश को रंग बिरंगा बना देता है। तब सुनहरे से मण्डित सूर्य पश्चिम की दिशा में शोभित होता है। सूर्यविम्ब के मध्य में नीलवर्ण की एक रेखा लक्षित है। मध्यभाग शरीर का कण्ठ के समान है। ग्रीव कण्ठ का पर्यायवाची है। ग्रीव के नीलवर्ण होने से सूर्य नीलग्रीव नीलकण्ठ इस नामका प्रसिद्ध है। अत: सूर्य के साथ अभिन्न आत्मा रुद्र का भी नाम नीलग्रीवअथवा नीलकण्ठ है। वैसे ही सातवें मन्त्र में कहा गया है

असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहित:।
उतैनं गोपा अदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्य: स दृष्टो मडयति न:॥

इसी प्रकार सूर्य रूप रुद्रदेवता का अस्तांचलसमय में रम्य मुहूर्तआकृषण होता है। तब गाये घर के प्रति पुन आते है। गायों के आने के साथ गायों के पालक गोपाल भी सूर्यरूप रुद्र के साथ सृष्टि के परिवेश से आकृष्ट होकर के उस रुद्रदेव को देखते हैं। यह समय गावों की रमणियों के लिए भी जल लाने का है। वे रमणीय भी जल लाने के समय आकृष्ट होकर रुद्रदेव की अपूर्वलीला को देखते हैं। रुद्राध्याय में काव्यरूप से यह मन्त्र काव्यकल्पना का और अलंकार से अलंकृत है।

टिप्पणियाँ

पाठ का सार

विशेष रूप से शैवधर्म का प्रचार इस अध्याय में विद्यमान है। उसका वैशिष्ट्य और स्वरूप का भी विस्तार से यहाँ वर्णन किया गया है। वह रुद्र भयङ्कर था। जन्म समय में स्वयं ही भीषण क्रन्दन करता है और उस शब्द से सम्पूर्ण भुवन कम्पायमान होता है वह रुद्र है। ऋग् यजुर्वेद भेद से उस रुद्र का वर्णन भी पृथक् होता है। वैदिक देवता के बाह्यप्रतीक को प्रत्येक एक-एक प्रकृतिक घटना है। उससे रुद्रदेव का प्रतीक वज्र है। रुद्रदेव हमेशा भयङ्कर नहीं होते हैं। उस रुद्र रूप के साथ उसका कल्याणमयरूप भी है। जैसे वह वैद्यराज है। वह वैद्यरूप से सभी को आरोग्य देता है। शिव, शङ्कर, मयस्कर, शम्भु, और मयोभव उसके कल्याणवाचक शब्द हैं। वह केवल आर्यो का ही नहीं अनार्यों का मनुष्यों का समस्त प्राणियों का उपास्य और पालक देवता है। सूर्य अस्तांचल समय में आकाश रक्तरञ्जित होता है। तब सूर्यविम्ब का मध्य भाग में एक विशिष्ट नीलवर्ण रेखा प्रतीत होती है। साधारण रूप से शरीर के मध्यभाग के समान कण्ठ है। सूर्य का मध्यभाग के कण्ठ का नीलवर्ण रूप से प्रतीयमान होने से सूर्य का नाम नीलकण्ठ हुआ। सूर्य के साथ रुद्र का अभेदप्रतिपादन होने से रुद्र का भी नाम नीलकण्ठ है। अब आदित्यरूप से रुद्र की स्तुति करते है। जो यह रुद्र ताम्रवर्ण, अरुणवर्ण, पिङ्गलवर्ण और सुमङ्गल तथा जो ये असंख्य किरणें हैं उनके क्रोध को हम भक्ति के साथ निवारण करते हैं। आदित्यरुप रुद्र हमेशा दर्शनीय है। सूर्यास्तचल समय में सूर्यदेव का अथवा रुद्रदेव की लालिमा को गोपालक और गांव की रमनिया रुद्रदेव की लीला को देखते हैं। नीलग्रीवा की हजार आखों को भंयकर रुद्र के लिए तथा उनके गणों के लिए हम नमस्कार करते हैं। हे भगवन् रुद्रदेव अपनी धनुष बाण से मुक्तकरो, अपने हाथो में धारण किये बाणों को हटा दीजिए। रुद्र का धनुष बाण और तलवार विफल हो। वह हमारे प्रति बिना अस्त्र के रहे। आयुधधारणनिमित्त रुद्र के रौद्र रूप अतिभयानक है। इसलिए हमारे प्रति जैसे वह शान्त और सुंदर मन वाले हो उसके लिए प्रार्थना करते है। हे रुद्रदेव बालकों का युवाओं का गर्भस्थ शिशु को, हमारे गुरु, पितृव्य आदि, माता-पिता और अपने सगे सम्बन्धियों का नाश मत करिए। सभी के प्रति आप हमेशा अनुग्रहशील हो ऐसी हम बार-बार प्रार्थना करते हैं।

पाठांत प्रश्न

1. रुद्रस्वरुप को लिखिए।
2. रुद्र का वैशिष्ट्य लिखिए।
3. सूर्य का नीलकण्ठ इस नामको सार्थक प्रतिपादित कीजिए।
4. रुद्रसूक्त का सार लिखिए।
5. नमस्ते रुद्र ... इस मन्त्र की व्याख्या कीजिए।

टिप्पणियाँ

6. यामिषु गिरिशन्त ... इस मन्त्र की व्याख्या कीजिए।
7. शिवेन वचसा त्वा ... इस मन्त्र की व्याख्या कीजिए।
8. नमोऽस्तु नीलग्रीवाय ... इस मन्त्र की व्याख्या कीजिए।
9. विज्यं धनुः ... इस मन्त्र की व्याख्या कीजिए।
10. नमस्त आयुधायानातताय ... इस मन्त्र की व्याख्या कीजिए।
11. परि ते धन्वनो ... इस मन्त्र की व्याख्या कीजिए।
12. या ते हेतिर्मीढुष्टम ... इस मन्त्र की व्याख्या कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

24.1

1. मङ्गलमय, भय से शून्य, पुण्यस्वरूप और प्रकाशक है।
2. शत्रुओं के नाश के लिए।
3. जगत् को रोग से मुक्त करने के लिए और कल्याण प्रदान करने के लिए।
4. रुद्र।

24.2

1. राक्षसों का समूह।
2. लाल, सुनहरा और पीला।
3. सूर्य।
4. नीलवर्ण।

24.3

1. अस्ताचल होने वाले सूर्य को।
2. रुद्र का।
3. बाण को।

4. अनेक कार्यों को पूर्ण करने वाले शक्तिशाली।

5. रोग रहित।

6. कपर्दः अस्यास्तीति विग्रह करने पर अत् इनिठनौ इससे इनिप्रत्यय करने पर निष्पन्न कपर्दिन्-शब्द का षष्ठी एकवचन में रूप है।

24.4

1. रोगहीन यह अर्थ है।

2. स्थापित करो।

3. धनुष सम्बन्धि आयुध को।

4. धनुः+त्वम्।

5. ल्यप्-प्रत्यय।

6. दुष्टों को दण्ड देने के लिए उसके आयुध के लिए तथा उसकी भुजाओं के लिए और धनुष के लिए नमस्कार करते हैं।

॥ चौबिसवाँ पाठ समाप्त ॥